विश्व मंदिर

– वियोगी हरि

यह एक भावात्मक निबंध है। इस निबंध में विश्व मंदिर के स्वरूप का चित्रण किया है। इस विश्व मंदिर में पूर्व, पश्चिम का झगड़ा नहीं है, संशय, अविश्वास, अनीश्वरता से परे समन्वय होगा और सूखे हृदयों में भी प्रेम का स्रोत फूट पड़ेगा। इस तरह लेखक ने विश्व कुटुम्बकम की कल्पना की है। उनका विश्वास है कि यदि ऐसे मंदिर की स्थापना हो सके तो जन सामान्य में संशय, अविश्वास और अनीश्वरता का दूषित वायुमण्डल कट जाएगा और सूखे दिलों से प्रेम रस का स्रोत फूट पड़ेगा। इस मंदिर में भिन्नता में अभिन्नता की भावना साकार हो सकेगी। प्रवेश - निषेध जैसी कोई बात न होगी।

परमेश्वर का यह समस्त विश्व ही महामंदिर है। इतना सारा यह पसारा उसी घट-घट व्यापी प्रभु का घर है, उसी ला मकाँ का मकान है। पहले उस मनमोहक को अपने अन्दर के मंदिर में दिल पर देख लो, फिर दुनिया के एक-एक जर्रे में उस प्यारे को खोजते चलो। सर्वत्र उसी प्रभु का सुन्दर मंदिर मिलेगा, जहाँ-तहाँ उसी का सलोना घर दिखेगा। तब अविद्या की अंधेरी रात बीत गई होगी। प्रेम के आलोक में तब हर कहीं भगवान के मंदिर ही मंदिर दिखाई देंगे। यह बहस ही न रहेगी, कि उस राम का वास इस घर में है कि उसमें । हमारी ऑखों में लगन की सच्ची पीर होगी, तो उसका नूर हर सूरत में नजर आएगा, कोने-कोने में साँवले गोपाल की मोहिनी बाँसुरी सुनाई देगी। हाँ ऐसा ही हेागा, बस आँखों पर ये मजहबी तअस्सुब का चश्मा उतारने भर की देर है।

यों तो ऐसा सुन्दर मंदिर कोई भी भावुक भक्त एक आनन्दमयी प्रेम की कल्पना के सहारे हृदय स्थल पर खड़ा कर सकता है या अपने प्रेमपूर्ण हृदय को ही विश्व -मंदिर का रूप दे सकता है। पर क्या अच्छा हो, यदि सर्वसाधारण के हितार्थ सचमुच ही एक ऐसा विशाल विश्व-मंदिर खड़ा किया जाए। क्यों न कुछ सनकी सत्य-प्रेमी नौजवान इस निर्माण कार्य में जुट जाएँ। इससे निःसन्देह, संशय, अविश्वास और अनीश्वरता का दूषित वायुमण्डल हट जायेगा और सूखे दिलों से भी एक बार प्रेमरस का स्रोत फूट पड़ेगा।

वह विश्व मंदिर होगा कैसा? एक अजीब सा मकान होगा वह देखते ही हर दर्शक की तबीयत हरी हो जायेगी। रुचि-वैचित्र्य का पूरा ख्याल रखा जायेगा। भिन्नताओं में अभिन्नता दिखाने की चेष्टा की जावेगी। नक्शा कुछ ऐसा रहेगा, जो हरएक की आँखों में बस जाये। किसी एक खास धर्म-सम्प्रदाय का न होकर वह मंदिर सर्वधर्म सम्प्रदायों का ''समन्वय'' मंदिर होगा। वह सबके लिए होगा, सबका होगा। वहाँ बैठकर सभी सबके मनोभावों की रक्षा कर सकेंं, सभी सबको सत्य, प्रेम करुणा का भाग दे सकेंगे ।

चित्र उस मन्दिर में ऐसे-ऐसे भावपूर्ण अंकित किये जायेंगे कि पाषाण हृदय दर्शक को भी उनसे सत्य और प्रेम का कुछ न कुछ सन्देश मिला करेगा। किसी चित्र में राजा-राजेश्वर राम गरीब गुह को गले लगाए हुए दिखाई देंगे, तो कहीं वे भीलनी के हाथ से उसके जूठे बैर चखते मिलेंगे, कहीं सत्यवीर हरिश्चन्द्र रानी शैव्या से वत्स रोहिताश्व का आधा कफन दृढ़ता से माँगता होगा । कहीं त्रिलोकेश्वर कृष्ण एक दीन-दरिद्र अतिथि के धूल भरे पैर को अपने प्रेम-अश्रुओं से पखारते मिलेंगे और कहीं-कहीं योगेश्वर वासुदेव घबराये हुए पार्थ को अनासक्तियोग का संदेश दे रहे होंगे और भी वहाँ ऐसे ही अनेक चित्र देखने को मिलेंगे। भगवान बुद्ध भिक्षा ग्रहण कर रहे होंगे। कहीं घिनौने कोढ़ियों के घाव धोते हुए दयालु ईसा का सुन्दर चित्र देखने को मिलेगा और किसी चित्र में वही महात्मा संसार के पापों को अपने रक्त से धोने के लिए सूली पर चढ़ते दिखाई देंगे। प्रियतमा की सूली को चूमने वाला मस्त मन्सूर भी वहीं मुस्कराता हुआ नजर आयेगा। कहीं दर्द दीवानी मीरा अपने प्यारे सजन का चरणोदक समझकर जहर का प्याला प्रेम से पी रही होगी और

किसी चित्र में निर्बल सूर की बाँह झटक कर नटखट नन्द-नन्दन वहीं कहीं लुका-छिपा खड़ा होगा। एक और चित्र वहाँ आप देखेंगे खादी की लंगोटी धारण किये गांधी एक तरफ चरखा चला रहे होंगे। उनकी गोद में नंग -धड़ंग बच्चे खेलते होंगे और वह अपने मोहन-मन्त्र से विपक्षियों के भी हृदय में प्रेम और सत्य को जाग्रत कर रहे होंगे और भी कितने सजीव चित्र उस मंदिर में खिंचे होंगे। हिमालय, गंगा और काशी-अयोध्या के दृश्य आप देखेंगे । वहीं बौद्धों के स्तूप और विहार भी दिखाई पड़ेंगे। काबे और जेरूसलेम तीर्थ भी वहीं अंकित होंगे। बड़े-बड़े ऋषियों के प्रेम-पीर का मर्म बतलाने वाले सन्तों और सूफियों के आकर्षक चित्र देखकर आप आनन्द के आकाश में उड़ने लगेंगे।

वहाँ अनेक धर्म ग्रन्थों के समन्वय सूचक महावाक्य भी दीवारों पर खुदे होंगे। वेद के मन्त्र, कुरान के आयतें, अवेस्ता की गाथाएँ, बौद्धों के सुत्त, इंजील के सरमन, कनफ्यूशियस के सुवचन, कबीर के सबद और सूर के भजन आप उस मन्दिर की पवित्र दीवारों पर पढ़ेंगे। किसी भी धर्मवाक्य में भेद न दिखाई देगा। सबका एक ही लक्ष्य, एक ही मतलब होगा। सब एक ही प्यारे प्रभु की तरफ इशारा कर रहे होंगे। उस विश्व-मन्दिर की दीवारों पर खुदे हुए वे प्रेम मन्त्र संशय और भ्रम का काला पर्दा उठा देंगे, अनेकता में एकता की झलक दिखा देंगे।

वहाँ की उपासना में पूर्व - पश्चिम का झगड़ा न रहेगा। सिरजनहार किस तरफ नहीं है? यह सारी दिशाएँ उसी की तो है। सारी भूमि गोपाल की ही तो है। वहाँ के एक-एक पत्थर में और एक-एक ईंट में प्यार ही प्यार भरा होगा। उन पत्थरों को चूमने में बेहद मजा आयेगा और उन्हें दण्डवत् प्रणाम करने में भी अपार आनन्द मिलेगा । वहाँ एक साथ प्रेम का प्रसाद बाँटा जायेगा।

सभी बेरोक - टोक उस विश्व मन्दिर के अन्दर जा सकेंगे। वहाँ प्रवेश निषेध की तख्ती न होगी। विद्वान भी वहाँ जायेंगे और मूर्ख भी जायेंगे। पुण्यात्मा जिस द्वार से जायेगी, उसी द्वार से पापात्मा भी जाकर प्रार्थना में शामिल होंगे। पतित से भी पतित मानव को वहाँ प्यार की पाक जगह मिलेगी। दलित और दण्डित, दीन और दुःखी, पतित और पापी सभी वहाँ परमपिता के दर्शन ले सकेंगे, सभी गोविन्द का गुणगान कर सकेंगे। पश्चाताप के आँसुओं से सुबह-शाम मंदिर का आँगन पखारा जायेगा और प्रायश्चित की धूप से उसका कोना-कोना सुवासित किया जावेगा । उस महान् समन्वय मंदिर में ही साधकजन लोक-सेवा और विश्व-प्रेम का आदेश प्राप्त कर सकेंगे। धार्मिक झगड़ों से ऊबे हुए, घबराए हुए शान्ति-प्रिय साधक वहाँ बैठकर दिव्य प्रेम की साधना किया करेंगे। अपनी-अपनी दिली राह से हर कोई वहाँ अपने राम को रिझायेगा। उस मंदिर में मैं - तू न होगा, वही-वही होगा।

क्या ऐसा सुन्दर विश्व-मन्दिर किसी दिन खड़ा किया जा सकेगा? क्यों नहीं ? पागल क्या नहीं कर सकते? उनके दिल में बात उतर भर जाये, फिर ऐसा कौन-सा काम है जिसे वे पूरा न कर सकें? वह शुभ दिन जल्द आ जाये, जब इस कल्पना का विश्व-मन्दिर हमारे वृहद भारत की तपोभूमि पर निर्मित हो।

अभ्यास

बोध प्रश्न :

1. लेखक अपना विश्व मंदिर कहाँ निर्मित कराना चाहता है?
2. परमेश्वर का महामंदिर किसे कहा गया है?
3. विश्व मंदिर हमें कब दिखाई देगा ?
4. समन्वय मंदिर किसके लिए होगा ?
5. विश्व मंदिर की दीवारों पर किन-किन धर्म ग्रन्थों के महावाक्य खुदे होंगे ? धर्म ग्रन्थों के नाम लिखिए ।

6. इस काल्पनिक विश्व मंदिर में मैं-तू न होगा इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए ।

7. काल्पनिक विश्व मंदिर के भव्य और दिव्य रूप को देखकर विपक्षियों के मन में कौन से भाव जाग्रत होंगे ?

8. समन्वय मंदिर में बैठकर लोग क्या करेंगे ?

9. विश्व मंदिर पाठ का उद्देश्य क्या है?

10. लेखक ने काल्पनिक विश्व मंदिर के निर्माण की कल्पना किस उद्देश्य से की है? लिखिए ।

11. विश्व मंदिर की स्थापना की आवश्यकता लेखक क्यों अनुभव करता है ?

योग्यता विस्तार

1. यदि आपको विश्व मंदिर बनाने का काम सौंपा जाए तो आप किस प्रकार का विश्व मन्दिर बनाएँगे ।

2. समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने के लिए आप अपनी योजना सुझाइए।

3. पाठ में दर्शाए गए भावों के आधार पर इस पाठ का कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

4. लेखक के विश्वमंदिर की कल्पना संबंधी विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

पसारा- प्रसार, फैलाव, ला-मका - जिसका कोई मकान न हो, ईश्वर का घर, जर्रे - कण, अविद्या - अज्ञान, आलोक- प्रकाश, सनक - हठ, अनीश्वरता - ईश्वर को न मानने का भाव, भावुक - सहृदय, संशय - शंका, तबीयत हरी हो जाना - प्रसन्न हो जाना, रुचि वैचित्र्य-रुचि की भिन्नता, अनासक्ति योग - किसी वस्तु में आसक्ति न रखकर कर्म करने की भावना होना। मंसूर - नौवी शताब्दी के एक सूफी संत, कावा - मक्का की एक पवित्र इमारत (जहाँ मुस्लिम हज करने पहुँचते हैं), आयत - कुरान के वाक्य, कुरान में प्रयुक्त एक, विशेष प्रकार का छन्द, अवेस्ता - पारसियों का मूल ग्रन्थ, इंजील - ईसाइयों का धर्म ग्रन्थ, कन्फ्यूसियस - चीन के एक धर्म प्रचारक, खुदी - घमंड, अभिमान, सुवासित - सुगंधित, कुर्बानी - बलिदान, निषेध - मनाही, सुत्त - बौद्धों का ग्रन्थ, पतित - गिरा हुआ, अधम, समाज से बहिष्कृत, सिरजनहार - बनाने वाला, दण्डवत - लेटकर प्रणाम करना, सरमन - धार्मिक उपदेश

* * *